संस्थान की विशिष्टता

आईएएम भारत और पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया में स्नातकोत्तर एमडी एयरोस्पेस मेडिसिन की डिग्री प्रदान करने वाला एक प्रमुख संस्थान है। एयरोस्पेस मेडिसिन एक बहुत ही विशिष्ट व्यावसायिक अभिविन्यास वाला एक अनूठा क्षेत्र है। संस्थान के पास अत्याधुनिक सिमुलेटर हैं जो दुनिया में सर्वश्रेष्ठ हैं। संस्थान का उद्देश्य स्नातकोत्तर छात्रों को शिक्षा के उच्चतम मानकों के साथ प्रशिक्षण प्रदान करना है। इसका उद्देश्य विश्व स्तर के विशेषज्ञ तैयार करना और इस क्षेत्र में उभरते विशेषज्ञों को एक सैन्य/नागरिक विमानन चिकित्सा व्यवसायी की भूमिका निभाने के लिए तैयार करना है। भारतीय सशस्त्र बलों के विशेषज्ञ अधिकारी की यह भूमिका मानव प्रदर्शन और एयरोस्पेस सुरक्षा में सुधार के अनुरूप है। प्रशिक्षण के अलावा, संस्थान भारत में वांतरीक्ष औषधि गतिविधि का केंद्र है, जिसमें नागरिक विमानन और सैन्य विमानन दोनों क्षेत्र शामिल हैं। संस्थान विभिन्न पीएसयू और डीआरडीओ प्रयोगशालाओं को एयरोमेडिकल मुद्दों पर परामर्श भी प्रदान करता है। यह इसरो को गगनयान परियोजना (मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम) के लिए मूल्यवान सलाह और परामर्श भी प्रदान कर रहा है।

वेबसाइट पर अपलोड करने के लिए आईएएम संक्षिप्त
वांतरिक्ष औषधि संस्थान

वांतरिक्ष औषधि संस्थान (IAM) भारतीय वायु सेना का एक प्रमुख संस्थान है और यह एक गौरवशाली अतीत, एक बहुत ही आशापूर्ण भविष्य का दावा कर सकता है और यह वर्तमान में देश में एयरोस्पेस मेडिसिन गतिविधियों का केंद्र है। इसकी उत्पत्ति 29 मई 1957 को हुई, जब विंग कमांडर आर अरुणाचलम के नेत्रत्व में पहले कमांडिंग ऑफिसर के रूप में स्कूल ऑफ एविएशन मेडिसिन की शुरुआत हुई थी। स्कूल की स्थापना का उद्देश्य सशस्त्र बलों और नागरिक डॉक्टरों के चिकित्सा अधिकारियों को एयरोस्पेस मेडिसिन में प्रशिक्षण प्रदान करना, एयरोस्पेस मेडिसिन में हवाई दल को प्रशिक्षित करना, एयरोमेडिकल समस्याओं पर शोध करना, डिजाइन और विकास के एयरोमेडिकल पहलुओं में एयरोस्पेस उद्योग की सहायता करना था। हवाई जहाजों की। अंतरिक्ष के क्षेत्र में संस्थान के प्रयासों को ध्यान में रखते हुए, 1989 में इसे एयरोस्पेस मेडिसिन संस्थान के रूप में पुनः नामित किया गया था। 1997 में, संस्थान राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलोर से संबद्ध था। विभिन्न उपलब्धियों के सम्मान में, 21 नवंबर 2005 को इस प्रतिष्ठित संस्थान को प्रेसिडेंशियल कलर्स से सम्मानित किया गया। संस्थान को प्रेसिडेंशियल कलर्स से सम्मानित होने वाली सशस्त्र बलों की पहली स्वतंत्र चिकित्सा इकाई होने का विशिष्ट सम्मान प्राप्त है। इसे राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा 08 सितंबर 2015 को 'उत्कृष्टता केंद्र' का दर्जा भी दिया गया है। संस्थान को नैक द्वारा 08 मार्च 2011 को ए और 28 मार्च 2017 को ए+ ग्रेड दिया गया है।

इस संस्थान के कर्मियों का कार्य लोकाचार फ्रांसिस ट्रूडो की प्रतिमा पर शिलालेख का उदाहरण देता है "कभी-कभी इलाज करने के लिए, अक्सर राहत देने के लिए, और हमेशा आराम देने के लिए"। वर्तमान में संस्थान की भूमिका तीन व्यापक क्षेत्रों में केंद्रित है:

(क)प्रशिक्षण

(बी) हवाई दल का चिकित्सा मूल्यांकन

(सी) एयरोमेडिकल रिसर्च एंड डेवलपमेंट ट्रेनिंग

यह स्वदेशी विमान विकास के डिजाइन, विकास और मूल्यांकन में मानव इंजीनियरिंग और मानव कारक सहायता प्रदान करने वाली नोडल एजेंसी है। यह संस्थान में दिए जाने वाले प्रशिक्षण की उच्च गुणवत्ता और यूनिट में शोधकर्ताओं द्वारा किए जा रहे अत्याधुनिक अनुसंधान के लिए भी व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है। संस्थान समर्पित और योग्य संकाय का दावा कर सकता है जो एयर क्रू, चिकित्सा अधिकारियों और पैरामेडिकल कर्मियों के लिए एयरोस्पेस मेडिसिन में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा में शामिल है। मित्र देशों के

कर्मियों को प्रशिक्षण भी दिया जाता है। संस्थान राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलोर से एयरोस्पेस मेडिसिन में तीन साल के रेजीडेंसी कार्यक्रम के लिए संबद्ध है।

एनवीजी प्रयोगशाला के स्वदेशी विकास के साथ, हवाई दल को अत्यधिक यथार्थवादी एनवीजी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके अलावा, एक पूर्ण गति एसडी सिम्युलेटर के अधिग्रहण के परिणामस्वरूप हमारे एयरक्रू का अधिक यथार्थवादी प्रशिक्षण हुआ है। गतिशील उड़ान सिम्युलेटर लड़ाकू पायलटों को उच्च निरंतर जी का अनुभव करने और नियंत्रित और सुरक्षित उच्च-जी वातावरण में एंटी-जी स्ट्रेनिंग कला सीखने की अनुमति देता है। यह निरंतर बहु-अक्षीय त्वरण का अनुकरण भी कर सकता है जिसका उपयोग ज्यादातर अनुसंधान और मूल्यांकन के लिए किया जाता है। 6 डिग्री फ्रीडम (डीओएफ) के साथ एयर फॉक्स डीआईएसओ या डिओरिएंटेशन सिम्युलेटर को दिन-रात की परिस्थितियों में एफ-16 लड़ाकू विमानों के साथ-साथ हल्के और भारी हेलीकॉप्टर की तरह उड़ाया जा सकता है।

सैन्य और नागरिक वायुयानों का चिकित्सा मूल्यांकन इस संस्थान की प्रमुख भूमिकाओं में से एक है। विशेष विभागों और सिमुलेटरों की उपलब्धता के कारण बैरोट्रॉमा, मस्कुलोस्केलेटल इंजरी, सिर की चोट और पोस्ट इजेक्शन मूल्यांकन जैसी कुछ अक्षमताओं के लिए हवाई दल का मूल्यांकन पूरी तरह से आईएएम के पास निहित है। संस्थान ने एक उच्च पेशेवर और कुशल वायु-चिकित्सा मूल्यांकन केंद्र के रूप में अपने लिए एक विशिष्ट स्थान बनाया है। यह काफी हद तक एयरक्रू के आकलन में साक्ष्य-आधारित एयरोमेडिकल निर्णय लेने वाले प्रतिमानों के आवेदन के कारण है।

एरोमेडिकल अनुसंधान इस संस्थान की विशेषज्ञता के प्रमुख क्षेत्रों में से एक रहा है। एरोमेडिकल अनुसंधान मुख्य रूप से परिचालन समस्याओं के समाधान प्रदान करने के लिए निर्देशित है। अनुसंधान की उच्च गुणवत्ता को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है। शुरुआती दिनों से ही, संस्थान ने स्वदेशी विमान विकास के डिजाइन, विकास और मूल्यांकन में विमानन उद्योग को व्यापक मानव इंजीनियरिंग और मानव कारक सहायता प्रदान की है। यह अद्वितीय है क्योंकि हमारे देश में ऐसी विशेषज्ञता केवल इसी संस्थान में मौजूद है।

संस्थान में एयरोमेडिकल गतिविधियों का जोर हमेशा यह सुनिश्चित करने की ओर रहा है कि भारतीय वायुसेना अपने आदर्श वाक्य 'नभम स्पर्श दीपम' को प्राप्त करना जारी रखे। मानव प्रदर्शन में सुधार और एयरोस्पेस सुरक्षा को बढ़ावा देना संस्थान में अनुसंधान गतिविधियों के मूल में रहा है। IAM की गतिविधियों ने हमेशा विमानन और अंतरिक्ष चिकित्सा के क्षेत्र में वृद्धि और विकास के साथ तालमेल बिठाया है। संस्थान वर्तमान एविएटर के सामने आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है। IAM के कर्मियों ने हमेशा "नभसि आरोग्यम" के अपने आदर्श वाक्य पर खरा उतरने का प्रयास किया है, यानी आकाश में बीमारी से मुक्ति सुनिश्चित करना।